# गांधीजी ने समाज परिवर्तन के लिए रचनात्मक कार्यक्रम को हाथ में लिया : प्रो. रामजी सिंह

## 'गांधी दर्शन एवं ग्रामीण विकास' विषय पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन

वर्धा, 16 फरवरी, 2017; महात्मा गांधी ने अट्ठारह रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की बात की थी। वर्तमान परिदृश्य में कौमी एकता, खादी, ग्रामोद्योग, किसान, मजदूर, आदिवासी, गांवों की सफाई आदि को देखकर ऐसा लगता है कि उनके अट्ठारह रचनात्मक कार्यक्रम आज और भी प्रासंगिक हो गए हैं। उक्त उद्बोधन प्रखर गांधीवादी विचारक प्रो. रामजी सिंह ने व्यक्त किए। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र तथा मानव संसाधन विकास केंद्र, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित 'गांधी दर्शन एवं ग्रामीण विकास' विषय पर आयोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के दौरान बोल रहे थे। इस अवसर पर म.गां.फ्यू.गु. समाज कार्य केंद्र के निदेशक व पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के संयोजक प्रो.मनोज कुमार मंचस्थ थे।

प्रो. रामजी सिंह ने कहा कि गांधी युग प्रवर्तक, विचारक एवं महात्मा इसीलिए माने गए कि कभी भी उन्होंने लोगों के सामने विचार एकांगी रूप में नहीं रखा। सामने अन्याय हो रहा है, उसको हटाकर न्याय की प्रतिष्ठापना करनी है। भ्रष्टाचार बढ़ रहा है तो उसको मिटाकर सदाचार को प्रतिष्ठित करना है। असत्य बढ़ रहा है तो उसको समाप्त करके सत्य की स्थापना करनी है। ऐसे समय में वे सर्वप्रथम अहिंसा के साधन से ही न्याय की, सदाचार की स्थापना करने के लिए अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रयत्न करते रहे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो. आर.पी.द्विवेदी ने गांधी दर्शन पर अपनी बातें विस्तार से रखीं तथा उन्होंने गांधीजी के वक्तव्यों को उद्धृत करते हुए कहा कि हमें सात प्रकार के पापों (चरित्रहीन ज्ञान, मानवता रहित विज्ञान, नैतिकता रहित व्यापार, चेतना रिहत भोग, त्याग रहित पूजा, कार्य रहित संपदा,सिद्धांत रहित राजनीति) से बचना चाहिए तभी मनुष्यता बची रह सकेगी। हिंदी विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के एडजंक्ट फैकल्टी प्रो.अरुण कुमार त्रिपाठी ने वैश्वीकरण के दौर में गांधी दर्शन की प्रासंगिकता विषय पर बात रखी। यह पुनश्चर्या पाठ्यक्रम 01 मार्च तक चलेगा। पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में देशभर के विविध प्रांतों के प्राध्यापक एवं शोधार्थी सहभागिता कर रहे हैं।